दीवार में एक खिड़की रहती थी

विनोदकुमार शुक्ल

साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कृति

दीवार में एक खिड़की रहती थी

विनोदकुमार शुक्ल

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन

4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली 110 002

शाखा

अशोक राजपथ, पटना 800 004

फ़ोन: +91 11 23273167 फ़ैक्स: +91 11 23275710

www.vaniprakashan.in
vaniprakashan@gmail.com

DEEWAR MEIN EK KHIRKEE RAHATI THEE
by Vinod Kumar Shukla

ISBN : 81-7055-541-8
Novel

© लेखकाधीन

संस्करण 2002, 2004, 2008
आवृत्ति संस्करण 2013

मूल्य : ₹ 250

इस पुस्तक के किसी भी अंश को किसी भी माध्यम में प्रयोग करने के लिए प्रकाशक से लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

न्यू कृष्णा ऑफ़सेट, दिल्ली-110 093 में मुद्रित

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से

पत्नी के लिए

उपन्यास में पहले एक कविता रहती थी

अनगिन से निकलकर एक तारा था।
एक तारा अनगिन से बाहर कैसे निकला था ?
अनगिन से अलग होकर
अकेला एक
पहला था कुछ देर।
हवा का झोंका जो आया था
वह भी था अनगिन हवा के झोंकों का
पहला झोंका कुछ देर।
अनगिन से निकलकर एक लहर भी
पहली, बस कुछ पल।
अनगिन का अकेला
अनगिन अकेले अनगिन।
अनगिन से अकेली एक-
संगिनी जीवन भर।

दीवार में एक खिड़की रहती थी

हाथी आगे-आगे निकलता जाता था और पीछे हाथी की खाली जगह छूटती जाती थी।

आज की सुबह थी। सूर्योदय पूर्व की दिशा में था। दिशा वही रही आई थी, बदली नहीं थी। ऐसा नहीं था कि सूर्य धोखे से निकलता था, उसके निकलने पर सबको विश्वास था। किसी दिन सूर्य बादलों में छुपा हुआ निकला होता पर निकला हुआ जरूर होता था। उसका उदय और अस्त सत्य था। सूर्य के उदय होने के प्रमाण की तरह दिन था और सूर्यास्त के प्रमाण की तरह रात हो जाती थी। अभी रात काली थी। रात के काले में सब काला दिखता था। दिन ऐसा पारदर्शी गोरा था जिसमें जो जिस रंग का था वह रंग साफ दिखता था। रघुवर प्रसाद का रंग काला था। बचपन से सुबह उठने पर उन्हें लगता था कि रात उनके शरीर में लगी रह गई है और हाथ मुँह धोकर, फिर नहाकर वह कुछ साफ और तरोताजा हो सकेंगे। बीच-बीच में महीनों सुबह उठने पर ऐसा लगना छूट जाता था। ऐसा नहीं था कि उन दिनों चाँदनी रात रही हो। महीनों चाँदनी रात नहीं होती थी। बरस भर उजली रात नहीं होती थी। अगर दो-तीन बरस चाँदनी रात होती तो उनका रंग उतना काला नहीं होता। रघुवर प्रसाद का रंग इतना काला नहीं था कि उनकी मूँछ उनके शरीर के रंग से मिली जुली होकर स्पष्ट नहीं दिखती हो। रघुवर प्रसाद बाईस-तेईस बरस के थे। काले रंग के बाद भी और भी काली भौं और बड़ी-बड़ी काली आँखों के कारण वे सुन्दर लगते थे। आज के दिन आज की चिड़ियों की चहचहाहट सुनाई दे रही थी। खिड़की से जो पेड़ दिख रहे थे, वे आज के पेड़ की तरह दिख रहे थे। आम के पेड़ थे। आम के पेड़ों के बीच वही पुराना नीम का पेड़ आज का पेड़ था। आम के पेड़ों की पत्तियाँ आज हरी थीं। जैसे सब पेड़ों की थीं। आम में बौर आ गई थी। पेड़ बौर से लदे थे। बौर के गन्ध में साँस खींचने से मन की चक्कर आ जाता था। पेड़ों में इतनी बौर लगी थी कि जितनी बौर निकलनी थी सब निकल गई, जिन्हें अगले वर्ष निकलना था, धोखे से इसी वर्ष निकल गई थीं।

खिड़की से पड़ोस की छः-सात साल की लड़की ने झाँककर कहा, “एक आम

का बौर तोड़ दो" लड़की खिड़की के नीचे रखी ईंटों पर खड़ी थीं। रघुवर प्रसाद के कमरे में झाँकने के लिए पड़ोस के छोटे-छोटे बच्चों ने वहाँ ईंटें जमाई थीं। जो बहुत छोटे बच्चे थे। तब भी झाँक नहीं पाते थे।

"काहे के लिए !"

"पूजा के लिए। बाई मँगाई है।" लड़की अपनी अम्मा को बाई कहती थी। लड़की सोकर अभी उठी होगी। उसके बाल उसी तरह बिखरे थे जैसे रात भर गहरी नींद सोने से होते थे। दोनों चोटियों में काले फीते थे। एक चोटी का फीता खुलकर लटका हुआ था।

"तुम्हारे पिता सो रहे हैं ?"

"बाहर गए हैं । तीन दिन बाद आएँगे। तोड़ दो। बाई नहा ली है।"

"अच्छा रुको !"

रघुवर प्रसाद उस लड़की के साथ पीछे आम के पेड़ों तक गए। रघुवर प्रसाद को लगा लड़की देर से उनके उठने का रास्ता देख रही होगी।

"तुम मेरे उठने का रास्ता देख रही थीं।"

"हाँ। उठने का रास्ता झाँककर देख रही थी।"

"तुम पहले से उठ गई थीं ?"

"हाँ।"

रघुवर प्रसाद का वह एक छोटा कमरा था जिसमें झाँककर छोटे-छोटे बच्चे अंदर अनेक रास्ते देखते थे। जैसे वे बैठे होते तो उनके खड़े होने का रास्ता। वे पढ़ रहे होते तो उनके सीटी बजाने का रास्ता। चहलकदमी करते हुए उनके लेट जाने का रास्ता। खाली कमरे में अचानक उनके दिख जाने का रास्ता। उनके चाय बनाने के रास्ते से लेकर हर क्षण का रास्ता। बच्चों के उस तरह देखने से रघुवर प्रसाद को फर्क नहीं पड़ता था। बच्चों के आने से उनके कमरे की चारदीवारी के अकेलेपन में एक खिड़की और खुल जाती थी। खिड़की से आने वाली हवा से उनको अच्छा लगता था।

रघुवर प्रसाद ऊँचे थे। उनका हाथ आसानी से खड़े-खड़े बौर तक पहुँच रहा था। फिर भी वे उस बौर की तरफ हाथ बढ़ा रहे थे जहाँ उनका हाथ नहीं पहुँच सकता था। वे उछले और बौर की डाली टूटकर उनके हाथ में आ गई। पर एक आँख भींचकर वे नीचे बैठ गए।

"क्या हुआ ?" लड़की ने पूछा।

"बौर का फूल झरकर आँख में चला गया।"

"फुक्का मार दूँ ?"

रघुवर प्रसाद ने कुछ नहीं कहा। लड़की ने फ्रॉक के छोर को उँगली में गुरमेटकर बाँधा और अपनी गरम साँस से फूँका फिर रघुवर प्रसाद के बिलकुल पास

जाकर साँस से गरम फ्रॉक के बाँधे छोर को आँख पर रखा। ऐसा दो-तीन बार किया।

"बस ठीक हो गया" रघुवर प्रसाद ने कहा। उनकी आँख लाल हो गई थी और आँसू आ गए थे।

"ठीक हो गया" लड़की ने पूछा।

"हाँ" उन्होंने कहा।

रघुवर प्रसाद के हाथ से बौर की डाली लेकर लड़की भाग गई। लौटते समय रघुवर प्रसाद को एक जगह दो ईंटें दिखाई दीं। ईंटें मिट्टी से सनी थीं। हाथों में एक-एक ईंट उठाए रघुवर प्रसाद पीछे की खिड़की की तरफ गए। खिड़की के नीचे बच्चों ने ईंटें ठीक से जमाई नहीं थीं। आधी ईंट उठाते बनी होगी इसलिए आधी ईंटें अधिक थीं। किनारे की ईंट के छोर पर पैर पड़ता तो ईंट पलट जाती और बच्चे गिर जाते। ईंटों को उन्होंने जमाया। ईंट के चौरस पर खड़े होकर उन्होंने कमरे में झाँका कि वे कमरे में नहीं थे। छोटे बच्चों के लिए तब भी नीचे होगा। वे ढूँढ़कर दो ईंट और लाए।

कमरे में आकर रघुवर प्रसाद को अपनी शादी का निमंत्रण-पत्र पढ़ने का मन हुआ। शादी हुए बारह दिन हो गए थे। निमंत्रण-पत्र खटिया के नीचे पेटी में था। पेटी निकालने के लिए वे नीचे झुके। उन्होंने सुना "ग में छोटे उ की मात्रा गुड़िया" ! खिड़की की तरफ उन्होंने देखा एक बच्चा और बच्ची दोनों की ऊँचाई बराबर थी। खिड़की के नीचे की चौखट तक दोनों की ठुड्डी थी। रघुवर प्रसाद ने उन्हें देखा तो दोनों मुस्कुराए। फिर दोनों हँसने लगे। उनकी हँसी सुनकर नीचे बैठी हुई गुड़िया नाम की लड़की भी खड़ी हो गई। रघुवर प्रसाद ने उसे देखकर कहा "ब में छोटी उ की मात्रा बुढ़िया।" "नहीं ! ग में छोटी उ की मात्रा गुड़िया।" "नहीं ! ब में छोटी उ की मात्रा बुढ़िया। अच्छा ! अब तुम लोग जाओ।" तभी तीनों बच्चे खिड़की से गायब हो गए।

रघुवर प्रसाद को लग रहा था कि पिता छोटू के साथ पत्नी को बिदा कराकर गाँव लिवा लाए होंगे। एक-दो दिन में यहाँ आ जाएँ। शादी के तीन दिन बाद पत्नी मायके चली गई थी। पिता ने पत्नी के जाने के छः दिन बाद रघुवर प्रसाद से बिदा कराने के लिए कहा था। विभागाध्यक्ष ने छुट्टी देने से मना कर दिया था।

रघुवर प्रसाद एक निजी महाविद्यालय में व्याख्याता थे। आठ सौ रुपए मिलते थे। महाविद्यालय, इस सत्तर हजार की आबादी वाली बस्ती से आठ किलोमीटर दूर था। इस बस्ती के सब तरफ के आखिरी मकान से लगे हुए खेत थे। बीच की बस्ती सबसे पुरानी थी। सभी आखिरी के मकान बाद के बने हुए थे। बस्ती के कुछ इधर-उधर आखिरी के मकान भी पुरानी बस्ती के समय के बने हुए थे। यह ऐसा शहर नहीं था जिसके आखिरी मकान के बाद गाँव की पहली झोंपड़ी शुरू होती। राष्ट्रीय राजमार्ग नं छः पर आठ किलोमीटर तक फैले खेतों के बाद सबसे नजदीक

जोरा गाँव था। शहर फैलते-फैलते नजदीक के गाँव तक पहुँचता तो गाँव शहर का मुहल्ला बन जाता था। गाँव का नाम मुहल्ले का नाम हो जाता था। जोरा गाँव आठ किलोमीटर दूर था इसलिए जोरा गाँव नाम का मुहल्ला नहीं बना था। वहाँ यह महाविद्यालय था। यह खपरैल की छतवाला लम्बी बैरकनुमा दाऊ के बाड़े में था। लाइन से कमरे बने थे। मिट्टी की दो फुट मोटी दीवाल थी। सामने एक लम्बी दालान थी। दीवालें छुही मिट्टी से पुती थीं। बरामदे में बड़े-बड़े आले बने थे। महाविद्यालय राष्ट्रीय राजमार्ग नं. छः पर था इसलिए ट्रकें, टेम्पो, बसें आ ा-जाया करती थीं। महाविद्यालय के सामने तीन-चार बैलगाड़ियाँ खड़ी रहतीं। दो-एक बैलगाड़ियों में बैल जुते होते। जमीन से टिकी बैलगाड़ियों के खुले बैल घास चरते हुए इधर-उधर घूमते रहते।

रघुवर प्रसाद महाविद्यालय जाने के लिए आधा घण्टा पहले राष्ट्रीय राजमार्ग पर खड़े हो जाते थे। उन्हें आजकल तीन-चार दिनों से महाविद्यालय की ओर जाता हुए एक हाथी दिखाई दे जाता था। लौटते समय भी एक-दो बार दिखा था। तब हाथी की पीठ पर पेड़ की डाल लदी होती। इसे हाथी खुद सूँड से तोड़ता होगा। दाढ़ी और बड़े बालों वाला एक सुन्दर युवा साधू हाथी पर बैठा रहता। साधू का रंग गेहुँआ था। हाथी के माथे, सूँड और कान के कुछ हिस्से की खाल ललायी लिए हुए थी और उसमें काले छीटे सुन्दर लगते थे। हाथी युवा होगा। खूबसूरत था। काला हाथी था।

रघुवर प्रसाद ने मन ही मन अपने एक हाथ को आगे बढ़ाकर जाते हुए हाथी के रंग से अपने रंग की तुलना की। हाथी की तुलना में उनका रंग साफ था।

कभी-कभी दिख गए काले-साँवले मनुष्यों के पश्चात् किसी एक दिन पेड़ों से उन्होंने तुलना की होगी कि आम के पेड़ के शरीर का रंग बिही के पेड़ के शरीर के रंग से बहुत काला था। बिही के पेड़ का रंग गेहुँआ चिकना था। आम के पेड़ के शरीर का रंग और नीम के पेड़ के शरीर का रंग एक जैसा काला था। इसी तरह पेड़ पर बैठने वाले पक्षियों से और उड़ते हुए पक्षियों से।

यह सच था कि धरती में पेड़ों की पत्तियों, घास के कारण हरा रंग सबसे अधिक था। आकाश में नीला रंग अधिक था। खुली धरती पर होने के कारण यह सुविधा थी कि एक मुश्त बहुत सा आकाश दिख जाता था। सुबह शाम आकाश के स्थिर रंगीन होने के बाद भी हरा उड़ता रंग उड़ते हुए तोतों के झुण्ड के कारण दिखाई देता था। आठ-दस कौवों से बड़ा झुण्ड आकाश में दिखाई नहीं देता था। तोते सटे हुए एक साथ उड़ते दिखाई देते थे। कौवे छितरे-छितरे उड़ते दिखाई देते थे। सफेद बगुले भी छितरे-छितरे उड़ते थे। कोयल पेड़ की डाली में छुपी-छुपी दिखती थी। गिलहरी पेड़ पर अकेली नहीं दिखाई दी। आस-पास दूसरी गिलहरी होती या चिड़िया जरूर होती। तब यह तय नहीं कर पाते थे कि टिट् टिट् बोलती हुई गिलहरी

Deewar Mein Ek Khirkee Rahati Thi

Publisher : Vani Prakashan ISBN : 9788170555414 Author : Vinod Kumar Shukal

Type the URL : http://www.kopykitab.com/product/9303

Get this eBook